अखनाटन (1375-1358 ई० पू०)

Badar Ara
Professor
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Mob-9431877688
P.G. / M.A. IInd Semester,

Dept. of A.I.H. & Archaeology, Patna University

Paper- Ancient World Civilization

ऐश्वर्यशाली अमेनहोटेप तृतीय के मरणोपरान्त उसका पुत्र अमेनहोटेप चतुर्थ मिस्र का फराओ बना। इस समय वह कम उम्र का था और अल्पायु होने के कारण उसने अपनी माता टाई के संरक्षण में शासन प्रारम्भ किया, किन्तु 15 वर्ष की अवस्था में उसने शासन का दायित्व स्वयं सम्भाल लिया और मिस्र पर स्वतन्त्र रूप से शासन करना प्रारम्भ किया। यही फराओ अमेनहोटेप चतुर्थ मिस्र में एक महान् धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्रान्ति का सूत्रधार बना और इसी कारण इसने अपना नाम भी बदल लिया। मिस्र के इतिहास में अमेनहोटेप चतुर्थ ही अखनाटन के नाम से विख्यात है। अखनाटन केवल मिस्र के इतिहास का ही नहीं, वरन विश्व इतिहास का एक बिलक्षण एवं अद्‌भुत प्रतिभाशाली शासक माना जाता है। यह सच है कि उसने केवल 17 वर्षों तक ही शासन किया तथा 30 वर्ष की अल्पायु में उसकी मृत्यु हो गयी, फिर भी उतने ही अल्प समय में उसने मिस्र में एक ऐसी धार्मिक क्रान्ति का सूत्रपात एवं निर्देशन किया जिसने उसे विश्व के धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में अमर बना दिया।

परिस्थिति एवं परिणामों के समुचित विश्लेषण के आधार पर यदि उसे ' मिस्र का अशोक कहा जाय तो इसमें कोई अत्यूक्ति नहीं होगी । उसने ऐसे समय में एकेश्वरवाद की कल्पना की जब सम्पूर्ण मिस्र विभिन्न देवी देवताओं की पूजा एवं आराधना में नतमस्तक था और इस प्रचलित धार्मिक परिपाटी के विरोध में आवाज उठाना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य था। अखनाटन का शासन काल अपने एकेश्वरवादी धार्मिक दृष्टिकोण के कारण अधिक प्रख्यात है। इसके पूर्ववर्ती विभिन्न फराओ के नेतृत्व मे मिस्र के जीवन के विभिन्न पक्षों में प्रगति के निश्चित लक्षण एवं चिह्न दृष्टिगोचर हुए, किन्तु धार्मिक क्षेत्र में कोई विशेष क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हुआ था।

धार्मिक क्रान्ति के कारण:- मिस्रवासी विभिन्न रूढ़िगत परम्परा के पूर्ण रूप से शिकार थे। विभिन्न आडम्बरों तथा धार्मिक एवं सामाजिक अंधविश्वासों के प्रचलन के कारण मिस्रवासी अनेक देवी देवताओं की आराधना करते थे। अनेक नगरों एवं स्थानों के अलग-अलग आराध्य देवी-देवता थे। एमन, रा, ओसिरिस, आइसिस, होरस, टा, अनुविस तथा अन्य देवी-देवता प्राकृतिक एवं मानवीय शक्तियों के समन्वित चिह्न स्वरूप पूजे जाते थे। अनेक पशु-पक्षियों के रूप में भी विभिन्न देवी देवताओं की भक्ति को जाती थी और उन्हें पूजा जाता था। इन विभिन्न प्रकार के देवी देवताओं का मिस्र के समाज में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान था। यहाँ पर यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि विभिन्न देवी-देवताओं के मानवीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी, क्योंकि नगरों और स्थानों में प्रत्येक देवता की पत्नी, पुत्र-पुत्रियाँ और शत्रु भी हुआ करते थे । तत्कालीन धार्मिक साहित्य में इनका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है मिस्र में सभी स्वभाव के देवी-देवता उपलब्ध थे। कुछ देवी-देवता प्रेम, दया एवं करुणा के साक्षात् प्रतीक माने जाते थे तो कुछ क्रोध, घृणा एवं ईष्या के जनक समझे जाते थे। परिणामस्वरूप कुछ देवी देवताओं की आराधना श्रद्धा एवं भक्ति से की जाती थी तो कुछ की अभ्यर्थना भय, आतंक एवं स्वार्थ की भावना के वशीभूत होकर की जाती थी।

मिस्र के निवासियों के धार्मिक जीवन की अन्य विशेषताएँ भी थी। मिस्र के निवासी विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियाँ दनाते थे और उनकी आराधना किया करते थे। सामान्यतया देवताओं के सानीप्य के लिए एक सहज माध्यम की आवश्यकता थी। पूजा के लिए जनसाधारण की देवताओं तक

पहुँचाने के लिए समाज में एक विशिष्ट वर्ग ने जन्म ले लिया था जो मिस्र के समाज में पुरोहित वर्ग के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। प्रारम्भ में मिस्र के पुरोहित विद्वान, धर्मवेत्ता, धर्मनिष्ठ एवं निस्वार्थी हुआ करते थे, किन्तु कालक्रम में परिवर्तित समय तथा परिस्थितियों में वे स्वार्थी, अधर्मी एवं विषयी होते गये। उन्होंने विशेष अर्थोपार्जन के लिए मिस्र के समाज में पूजा के जटिल विधि-विधानों का एक जाल-सा बिछा दिया जिसमें मिथ्या आडम्बर एवं बाहरी तड़क-भड़क के अलावा अध्यात्म विषयक कुछ भी नहीं था। मन्दिरों, धार्मिक स्थानों एवं पुरोहितों के बीच भ्रष्टाचार का बोलबाला दिन-प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा था। असमान धार्मिक व्यवस्था तथा विषम अन्धविश्वास ने मिस्रवासियों के मानसिक क्षितिज को अत्यन्त संकुचित कर दिया था। वे कूपमंडूकता से अभिशप्त थे और धर्म उनके जीवन में मात्र आडम्बर के रूप में ही अवशिष्ट था। अखनाटन के सिंहासनारूढ़ होने के समय मिस्र की ऐसी धार्मिक अवस्था थी जिसमे बहुदेववाद प्रचलित था, असंख्य देवी-देवताओं की आराधना की जाती थी, देवताओं के मानवीकरण की प्रक्रिया चल पड़ी थी, धार्मिक पाखण्ड, आडम्बर एवं बाहरी दिखावे का काफी बोलबाला था। मूलरूप से पवित्र धार्मिक आचरण एवं भावना पुजारियो के चलते कुंठित हो गयी थी।

धार्मिक क्रान्ति और आन्दोलन:- अखनाटन ने मिस्त्र के इसी अनेकेश्वरवादी एवं आडम्बर मण्डित धर्म को परिष्कृत करने के लिए एक धार्मिक आन्दोलन प्रारम्भ किया जिसे 'अखनाटन' भी कहा जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'एटन का क्षितिज' अ्थात् एटन देवता सर्वोपरि एवं सर्वोच्च है। एटन की महिमा को स्वीकार करते हुए इस धार्मिक क्रांति का मुल उद्देश्य अनेक देवी देवताओं के स्थान पर एक देवता 'एटन' की पूजा करना तथा पुरोहित वर्ग के पाखण्ड, आडम्बर, चरित्रहीनता एवं अधार्मिकता को समाप्त कर देना था। अखनाटन ने बहुदेववाद, जटिल कर्मकांड और पूरोहितों के प्रति गहरी उदासीनता दिखलायी और उनसे विमुख होकर मिस्र की प्रचलित धार्मिक प्रणाली का घोर विरोध किया। उसने मिस्र के सर्वाधिक लोकप्रिय देवता एमन और साथ ही-साथ अन्य सारे देवी देवताओं की आराधना एक विशेष राजाज्ञा द्वारा बन्द करवा दी। इन सब देवी देवताओं के स्थान पर एकमात्र सूर्यदेव की पूजा करने का राजकीय आदेश दिया। सूर्यदेव सम्पूर्ण मानव समाज का देवता था, एटन उसका प्रतीक था। एटन सूर्य की शक्ति का द्योतक था प्रेम, दया, करुणा एवं शान्ति का प्रतीक था। वह सम्पूर्ण प्राणीमात्र के निस्वार्थ कल्याण की कामना करता था। वह न लोभी था और स्वादिष्ट खाद्यान्नों का इच्छुक अथवा मनुष्य के रक्त का भूखा ही। वह सच्ची आराधना एवं प्रेम-प्रसूनो की प्राप्ति से ही प्रसुदित हो जाता था। अतः सर्वसाधारण वर्ग एवं विभिन्न समुदाय में सदस्य-गण अब बिना किसी माध्यम के ही एटन तक पहुँच सकने की स्थिति में थे। वह निराकार और निर्गुण था और उसकी मूर्ति बनाने की परिपाटी नहीं थी। अतः उसकी पूजा-विधि में मन्दिरों एवं पुरोहितों की न कोई आवश्यकता थी औ न महत्त्व ही। एटन भय का प्रतीक नहीं, प्रेम का देवता था। अशान्ति का द्योतक नहीं, शान्ति का वाहक था, अनेकता का स्रोत नहीं, एकता का मूलमन्त्र था। अतः इन विभिन्न कारणों तथा फराओ के व्यक्तिगत आचरण से अखनाटन के शासनकाल में एटन के प्रभाव का सर्वत्र व्याप्त हो जाना अस्वाभाविक नहीं था।

अपनी धार्मिक क्रांति को सफल बनाने तथा एटन की सर्वोच्चता एवं संप्रभुता स्थापित करने के लिए अखनाटन ने विभिन्न प्रयास किया। राजकीय आदेश को उसने मात्र राजाज्ञा ही नहीं, बल्कि उसे व्यावहारिकता के ठोस धरातल पर उतारने का जीतोड़ प्रयत्न किया अब केवल मिस्तर तक ही एटन की पूजा सीमित नहीं रह सकी । इस समय मिस्र का अधिकार विभिन्न एशियाई एवं अफ्रिकी देशों पर था तथा वहाँ के नागरिकों को एटन की आराधना करने का राजकीय आदेश दिया गया। एमन तथा अन्य देवी देवताओं के मन्दिर बन्द कर दिये गये मन्दिरों को विभिन्न दीवारों से इन देवताओं के चित्र बीच से उतार दिये गये । उनके नामों तथा चिह्नों को मिटवा दिया गया। उसने अपने पिता की सैकड़ों समाधियों से भी एमन का नाम मिटवा दिया। उसे पुरानी राजधानी थीब्स में मन की प्रधानता नजर आती थी और मेम्फिस में उसे 'रा' की प्रबलता दृष्टिगोचर होती थी। ये दोनों स्थितियाँ उसके मनोनुकूल नहीं थी और अखनाटन ने इन्हें पाप एवं भ्रष्टाचार का केन्द्र समझना प्रारम्भ किया और वह एक नयी राजधानी की निर्माण- योजना में संलग्न हो गया थीव्स तथा मेम्फिस के बीच के मरुस्थल में स्थित इस राजधानी का नाम 'अखटेटन' रखा गया। आधुनिक युग में यह स्थान तेल-अल अमरना के नाम से विख्यात है। इस राजधानी में एमन तथा रा

का कोई नामलेवा भी नहीं था तथा सर्वत्र एटन का एकछत्र साम्राज्य था। इस नयी राजधानी के निर्माण मे मुख्यतः ईंटों का प्रयोग किया था जो मिस्र के भवन-निर्माण कला के क्षेत्र में सर्वथा एक नया अनुभव था। इस नये प्रयोग का परिणाम हुआ कि राजधानी के भवन सुदृढ नींव पर निर्मित नहीं हो सके और अखनाटन की समय पश्चात् ही ये भवन विनष्ट हो गये।

सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण से अखनाटन का धर्म यथार्थ भले ही नहीं था, यह दार्शनिक दृष्टिकोण से अत्यन्त उच्च श्रणी का सिद्ध हुआ। अखनाटन ने जनता में यह प्रचार किया कि एटन देवता सूर्य चक्र के द्वारा अपने आप को प्रकट करता है। जिसे निरन्तर देखा जा सकता है। अतः वह एटन के प्रतीक रूप में सूर्य के दृश्य चक्र की पूजा करता था। फराओ को यह अटल विश्वास था कि विश्व के प्राणी-मात्र पर एटन की उष्णता और प्रकाश बिखरता है। वह सूर्य के माध्यम से उष्णता और प्रकाश पृथ्वी के प्राणियों तक पहुँचाता है। इस प्रकार अखनाटन की नास्तिकता में हिब्रू मसीहों के पूर्व ही उत्तम धार्मिक विचारों का उनन्यन हुआ था। सूर्य का दृश्य-चक्र उस स्वर्गीय देवता का वातायन मात्र था जिसके द्वारा एटन देवता अपनी प्रभा को पृथ्वी पर बिखेरता है। इस प्रकार अखनाटन ने एक अनुपम धार्मिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जो विज्ञान पर आधारित था।

धार्मिक क्रांति की विशेषताएँ :- अखनाटन की धार्मिक क्रांति की सम्पूर्ण विशेषताओं को निष्कर्ष स्वरूप इस प्रकार आयोजित किया जा सकता है -

(i) अखनाटन की धार्मिक क्रांति में अत्यन्त मौलिक विचार निहित थे। यह सच है कि मिस्र में एटन की पूजा नवीन वस्तु नहीं थी 'रा' की पूजा से पहले ही प्रचलित थी। ऐश्वर्यशाली अमेनहोटेप तृतीय एटन का पुजारी था और उसने व्यक्तिगत जीवन में एटन की ही उपासना किया करता था; पर उसने एमन के पुरोहितों की भावना एवं जनसमुदाय के धार्मिक विचार को ध्यान में रखकर 'एटन' की आराधना को अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि ही रहने दी तथा उसे राजधर्म नहीं बनाया। अखनाटन का एटन एक सहृदय पिता था जो सभी प्राणियों पर समदृष्टि रखकर करुणा-की अविरल दृष्टि करता था। क्रोध एवं आतंक की भावना को दूर करने के लिए अखनाटन ने एटन की पूजा का समय सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय निश्चित किया, क्योंकि इस समय में सूर्य की किरणें, स्निग्ध, कोमल, मनमोहक , सात्विक तथा लाभप्रद होती है। परिणामस्वरूप 'रा' के भीषण आतंक को एटन की स्निग्ध कोमलता ने समाप्त कर जनमानस में व्याप्त भय का उन्मूलन किया।

(ii) अखनाटन के धर्म में दार्शनिकता तथा वैज्ञानिकता का पुट था। उच्च धार्मिक चिन्तन, सूर्य-चक्र की उष्णता एवं कोमलता सर्वत्र व्याप्त थी। फिलण्डर्स पेट्री का अभिमत है कि वैज्ञानिकता की कसौटी पर अखनाटन के विचारों की तुलना अन्य किसी के विचार से नहीं की जा सकतीं। विश्व इतिहास का यह अभूतपूर्व एव अद्वितीय अनुभव है।

(iii) अखनाटन की धार्मिक क्रांति की विभिन्न योजनाओं में पुरोहित वर्ग का कोई स्थान नहीं था। पुजारियों के महत्त्व को घटाकर एक नवीन एवं परिष्कृत पूजा-पद्धति अपनायी गयी। अब न मन्दिर की प्रधानता रही और न पुजारियों के आतंक एवं आडम्बर ही वर्तमान रहे। एटन की प्रसन्नता के लिए न तो बलि की आवश्यकता रही और न कठिन तप की। एटन तो साधारण पत्र, पुष्प, फल-फूल एवं सात्विक प्रेमाचरण से ही प्रमुदित हो जाता था। राजकीय आदेश निकालकर जनसमुदाय में प्रचार किया जाने लगा कि एटन देवता विधि विधान एवं दुरूह कर्मकाण्डों के जल की अपेक्षा सच्ची भक्ति एवं शुद्धाचरण से ही प्रसन्न रहता है और प्राणीमात्र के लिए मंगल कामना करता है। मिस्तर के जटिल कर्मकाण्ड, बहुदेववाद एवं कठिन पूजा-पद्धति को सरल बनाकर अखनाटन ने निस्संदेह मिस्रवासियों को पूरोहित वर्ग के चंगुल से मुक्त किया। उसने एटन में सम्पूर्ण निष्ठा प्रकट की और एटन तक पहुँचने का मार्ग अत्यन्त सरल एवं आडम्वरहीन हो गया।

(iv) अखनाटन के नये धर्म में नैतिकता का प्रबल पुट था। उसने सत्य पर विशेष जोर दिया एवं धर्मानुरूप आचरण के लिए आग्रह किया। अखनाटन का व्यक्तिगत आचरण तथा उसके परिवार के सदस्यों की दिनचर्या एटन की आराधना के निमित्त समर्पित थी। फराओ का वेश बदल कर भ्रमण करना, जनता की अवस्था को जानने की चेष्टा करना एवं एटन के विभिन्न गरिमामय स्वरूपों से जनसमुदाय के बीच एक

दिव्य-अन्तर्दृष्टि उत्पादन करना उसका नित्यकर्म बन गया था। फराओ की प्रत्येक गतिविधि एटन के मंगलमय स्वरूप एवं जनसमुदाय की कठिनाईयों के मध्य सामंजस्य उपस्थित करने के उद्देश्य से प्रेरित थी। उसमें विश्व-बंधुत्व की भावना ऐसी थी जिनमें एटन का असीम प्यार उसके साम्राज्य के प्रजागण के निमित्त उमड़ पड़ता था। इस आध्यात्मिक अनुभव में सीरिया, नूबिया तथा फिलीस्तीन की प्रजा भी शामिल थी। अखनाटन का एटन निश्चितरूप से प्राणीमात्र का सहृदय पिता था, मात्र क्रूर विजेता नहीं। विश्वइतिहास का यह प्रथम अवसर था जबकि विश्वबंधुत्व के महान् विचार को धर्म एवं प्रशासन का अभिन्न अंग बना दिया गया और 'जीवन सत्य' की विराट कल्पना की गयी। फराओ को राज्य के बच्चों से बेहद प्यार था और वह अपनी राजमहिषी के साथ उनके साथ समय व्यतीत करता था। इस प्रकार अखनानटन रूढ़िवादी परम्परा का कटु आलोचक बन गया उसने स्वयं सत्य एवं सदाचार को अपनाकर अपनी प्रजा के समक्ष ज्वलंत आदर्श उपस्थित किया जिससे फराओ का व्यक्तिगत धर्म साम्राज्य की प्रजा का धर्म अत्यन्त सरलता से हो गया, किन्तु आन्तरिक असन्तोष एवं विभिन्न वर्गों के विरोध के कारण फराओ को असमय मृत्यु एटन समर्थकों की संख्या क्षीण हो गयी।

(v) अखनाटन के धर्म में मूर्तिपूजा का स्थान नही था उसका एटन निराकार था, अतः उसकी मूर्ति बनाने की आवश्यकता नहीं थी। इस विश्वास ने एकेश्वरवाद का प्रचार किया जिसके फलस्वरूप मिस्र में आगे चलकर राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक एकता स्थापित करने में सुविधा हुई।

(vi) अखनाटक के धार्मिक आन्दोलन ने भूत, दैत्य, सर्प आदि भयानक जीवों के अस्तित्व स्वीकार नहीं किया और इस प्रकार परम्परागत अन्धविश्वासों एवं रूढ़िगत मान्यताओं पर कुठाराघात किया। अखनाटन ने इस सिद्धान्त का निरूपण किया कि आत्मा अमर है। मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् भी उसकी आत्मा सूर्य की रश्मियों, पक्षियों के कलरव एवं पुष्पित सुमनो के सौन्दर्य मे बार-बार परिवर्तित होकर नश्वर बनी रहती है। इस प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए फराओ ने सुन्दर कविताओं का सृजन किया तथा इसे सर्वग्राह्य बनाने का यथासाध्य प्रयत्न किया। उपर्युक्त विभिन्न विवरण इस तथ्य को सिद्ध करते हैं कि धार्मिक चिन्तन के क्षेत्र में अखनाटन के धार्मिक विचार अत्यन्त विशिष्ट स्थान रखते हैं।

अखनाटन की असफलता :- महान् आदर्शों से परिपूर्ण रहने पर भी अखनाटन की धार्मिक क्रांति असफल हो गयी और उसका महान् धर्म भी अनाकर्षक होकर विलुप्त हो गया । फराओ की दुर्भाग्यपूर्ण विफलता के अनेक कारण थे। अखनाटन युद्ध एवं रक्तपात से घोर घृणा करता था। वह ज्ञान एवं दर्शन के क्षेत्र में महान् था, पर इस समय ज्ञानी एवं दार्शनिक फराओं की आवश्यकता नहीं थी । सर्वमान्य है कि दार्शनिक विरले ही सफल शासक होते हैं । अखनाटन समय से इतना आगे था कि उसने मिस्र को टहलाने से पहले ही दौड़ाने का प्रयास किया इसने जैसे ही शासन की बागडोर संभाली, आन्तरिक तथा बाह्य समस्याओं ने साम्राज्य को आक्रान्त करना प्रारम्भ कर दिया । बास्तब में अमेनहोटेन तृतीय की मृत्यु के पश्चात् मिस्त्र को एक रण निपुण शक्तिशाली शासक की आवश्यकता थी। किन्तु अखनाटन के रूप में उसे एक ऐसा शासक मिला जो न तो शक्तिशाली था और न व्यावहारिक ही। वह निरन्तर केवल सैद्वान्तिक समस्याओं से ही जूझता रहा तथा उसमें व्यावहारिक राजनीतिक दूरदर्शिता का सर्वथा अभाव था। इस कठिन समय में मिस्र को धुतमोस तृतीय जैसे कुशल विजेता एवं योग्य प्रशासक की आवश्यकता थी। अपने आदर्शों के कल्पनालोक में निश्चेष्ट पड़ा रहने वाला सिद्धान्तवादी अखनाटन विकट परिस्थितियों पर नियन्त्रण स्थापित कर पाने में सर्वथा असमर्थ हो गया। उसके एशियाई राज्य तथा थीब्स के एमन के पुजारी उसके विरुद्ध षडयन्त्र करने लगे। अतः इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है कि अखनाटन में अपने वंश के शासन को शक्तिहीन तथा निष्क्रिय बना दिया और 18वें अखनाटन ने अपने वश के शासन की शक्तिहीन तथा निष्क्रिय बना दिया और 18वें राजवंश का शासन पतनोन्मुख हो गया। प्रायः सभी इतिहासकार इस तथ्य से सहमत है कि आदर्शवादिता के कारण ही अखनाटन ने मिस्र को अनन्त संकटों के ऊहापोह में डाल दिया और साम्राज्य की सामरिक शक्ति को क्षीण कर दिया। इन त्रुटियों ने मिस्र को भविष्य में विभिन्न प्रकार से प्रताड़ित किया।

अखनाटन की असफलता का प्रथम प्रधान कारण था उसकी व्यक्तिगत प्रवृत्ति जो युद्ध एवं विजय से घृणा करती थी। उसका आराध्य देव एटन भी हिंसा एवं रक्तपात में विश्वास नहीं करता था। अपने शत्रुओं की आक्रामक नीति की सूचना पाकर भी अखनाटन ने उससे युद्ध नहीं किया। सेना की सारी

कुशलता जाती रही एवं सैनिकों ने निस्पाय होकर हथियार डाल दिया। इसका परिणाम भयानक हुआ। उसके एशियाई राज्य धीरे-धीरे स्वतन्त्र होने की कामना से सिर उठाने लगे और उसके ही शासन काल में मिस्र की संप्रभुता को खुली चुनौती देने लगे उसने सीरिया तथा फिलिस्तीन को अपने साम्राज्य से निकल कर स्वतन्त्र हो जाने दिया और अपनी सेना को कोई भी आदेश नहीं दिया। यह उसकी महान राजनीतिक भूल थी।

अखनाटन की धार्मिक क्रांति की विफलता का दूसरा कारण था एमन के पुजारियों एवं समर्थकों का प्रबल विरोध। मिस्र के निवासी सदियों से एमन की पूजा करते आ रहे थे इस काल में वे अखनाटन के राजनीतिक दबाव के कारण एटन की आराधना करने लगे थे पर इससे उनकी धार्मिक भावना को असीम कष्ट पहुँचा था। उनका क्रोध और भी बढ़ा जब फराओ ने एमन को राजधर्म से पदच्युत कर दिया और उसके सारे मन्दिरों के द्वार बंद करवा दिये गये। मन्दिरों एवं स्मारकों से एमन का नाम मिटवा देने का राजकीय आदेश प्रसारित किया गया। इस क्रम में उसने अपने पिता अमेनहोटेप तृतीय की समाधि पर से भी एमन का नाम मिटवा दिया। यह अखनाटन की धार्मिक असहिष्णुता का परिचायक था जिस कारण एमन-समर्थक उसके धर्म के बड़े शत्रु हो गये। पुरोहित वर्ग की आर्थिक रीढ़ टूट गयी और वह अत्यन्त क्षुब्ध होकर समय की प्रतीक्षा करने लगा कि कब फराओ शक्तिहीन हो कि उसके विरोध में आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया जाय। अतः जैसे ही यह बात स्पष्ट होने लगी कि अखनाटन हथियार उठाने वाला नहीं है, उन्होंने एटन के बिरुद्ध खुलेआम विद्रोह कर दिया। एमन के समर्थकों की संख्या अधिक थी, अतः एटन विरोधी आन्दोलन प्रबल होता गया। सर्वसाधारण को ऐसी आशंका हुई कि परम्परागत धार्मिक अनुष्ठान एवं कुल देवताओं की पूजा बंद हो जाने से उनके स्वर्ग जाने के मार्ग बन्द हो जायेंगे और उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी। आन्तरिक विद्रोहों की बहुलता एवं जनसमुदाय की पिछड़ी एवं शंकायुक्त मनोवृत्ति के कारण ही उसे अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अखटेटन में स्थायी रूप से निवास करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

धार्मिक क्रान्ति ने संचालन में अखनाटन से कई भूले हुईं। वह अपने धार्मिक सुधारों को अत्यन्त शीघ्रता से लागू कर तत्क्षण उसका परिणाम भी देखना चाहता था, पर यह कभी सम्भव नहीं था कि एटन इस गति से सम्पूर्ण मिस्र के निवासियों का आराध्यदेव बन जाय। निःसन्देह अखनाटन प्रतिभाशाली फराओ था और अपने धार्मिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन में वह समय से बहुत आगे था। उसकी प्रजा उसके सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ थी। उसके चरित्र में सारे विलक्षण गुण थे जो साधारण मस्तिष्क वाले मनुष्यों के लिए पागलपन के पर्याय थे अतः जब अखनाटन के विलक्षण गुण उसके धार्मिक आन्दोलन के कार्यक्रम में प्रदर्शित हुए तब जनता उनसे परिचित हुई और उन्हें समझने में असमर्थ होने के कारण फराओ को सनकी कहा। इस विलक्षण प्रतिभा के विभिन्न प्रयासों के परिणाम संकटपूर्ण हुए।

अखनाटन का धर्म वस्तुतः केवल राजधर्म था। फराओ एवं उसके कुछ दरबारी ही एटन में सच्ची आस्था रखते थे, परन्तु इस तथ्य का भी उल्लेख मिलता है कि उनके दरबारी भी एटन के समर्थक नही थे। वे सच्चे मन से एटन की आराधना न कर फराओ के भय से अथवा उसे प्रसन्न रखने के लिए एंटन का समर्थन करते थे। समाधियों पर उत्कीर्ण अभिलेखों से हमें उन दरबारियों के नाम का पता चला है जिन्होंने अखनाटन के क्रान्तिकारी धर्म को स्वीकार किया था।

अखनाटन का राजधानी परिवर्तन भी उसके धर्म एवं साम्राज्य के विनाश का एक प्रमुख कारण बना। फराओ ने थीब्स के बदले नवनिर्मित अखेटेटन नगर को अपनी राजधानी बनायी। इसके कई बुरे परिणाम हुए। थीब्स में सीरिया, फिलीस्तीन एवं अन्य पूर्वी भूमध्यसागरीय देशों में अपार सम्पत्ति आती थी जिसका आना केन्द्रीय सत्ता की दुर्बलता के कारण बन्द हो गया और इससे साम्राज्य को भीषण आर्थिक क्षति पहुँची। अखनाटन ने युद्ध एवं रक्तपात की नीति को तिलांजलि दे दी। परिणामस्वरूप मिस्र के सारे सैनिक, सामन्त एवं सेनापति वस्तुतः कार्यमूत्त हो गये विशेषकर सामन्तों को यह जीवन पसन्द नहीं आया। विजय अभियान के क्रम में उन्हें विजित देशों से विभिन्न प्रकार की मूल्यवान वस्तुएँ एवं रत्नजटित सामान प्राप्त होते थे। अखनाटन के समय युद्ध बन्द हो जाने के कारण इन चीजों की प्राप्ति की सम्भावना नहीं थी और सामन्त बड़े कष्ट में थे उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी थी और वे अखनाटन के धर्म एवं शासन से क्षुब्ध थे। वे अवसर की खोज में थे कि किस प्रकार अखनाटन के धर्म एवं शासन का तख्ता पलट दिया

जाय । सामन्त वर्ग का भीषण असन्तोष भी अखनाटन के पतन का एक प्रमुख कारण बन गया। यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि अखनाटन के उत्तराधिकारी योग्य एवं सक्षम नहीं थे जिसके परिणामस्वरूप उसका धर्म प्रायः मुमूर्षु हो गया । अखनाटन को छः पुत्रियाँ थीं जो हाशेपसुट एवं टाई की तरह प्रतिभासम्पन्न नहीं थी।

अपनी विफलताओं के बावजूद अखनाटन विश्व इतिहास का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पात्र है। वह इतिहास का पहला सिद्धान्तवादी, पहला उप्देशक और पहला परोपदेशक था। एटन में पूर्ण विश्वास कर उसने अपने को भारतीय सम्राट् अशोक की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। भेरीघोष के स्थान पर उसने धम्म-घोष से सम्पूर्ण मिस्री जीवन को प्रतिध्वनित कर दिया और उसने कभी युद्ध नहीं करने का व्रत लिया । सीरिया और फिलीस्तीन पर हिट्रियों के आक्रमण होते रहे, थीब्स में एमन के असंख्य समर्थक एटन पर आक्रमण करने की क्रमबद्ध योजना बनाते रहे, दक्षिण मिम्र के निवासी फराओ की कटु आलोचना करते रहे, किन्तु अखनाटन अपने सिद्धान्त पर अडिग रहा और उसने साम्राज्य को विघटित हो जाने दिया। वस्तुतः वह अपने युग से आगे था। मिस्र की जनता बहुदेववाद और अनेक धार्मिक अंधविश्वासों में जकड़ी हुई थी और उसके ऊँचे सिद्धान्तों को ठीक से समझ नहीं सकी थी। विश्वबन्धुत्व का पाठ पढ़ानेवाला यह आदर्शवादी फराओ अपने ही देश मे कटु आलोचना का पात्र बन गया और उसके मरने के उपरान्त लोगो ने उसे 'अखटेटन का हत्यारा' और 'जानवर-अखनाटन, कहकर उसकी भत्सना की, परन्तु यह विश्व इतिहास का पहला व्यक्ति है जिसने युद्ध काल में भी धार्मिकता का सन्देश दिया तथा ईमानदारी, सादगी, सच्चाई एवं स्पष्टवादिता से असीम प्यार किया। इससे सन्देह नहीं कि अखनाटन एक महान् प्रवर्तक था।